डॉ. विनयगल वैश्य
एसोसिएट प्रोफेसर
विषय- संस्कृत
आर-सी. एस. कॉलेज मंडोक
बेगूसराय

संस्कृत (प्रतिष्ठा)
बी.ए. (प्रथम खण्ड)

लघुसिद्धान्त कौमुदी
(हल् संधि-)

शश्छोऽचि (सूत्र). अम: पदस्य शस्य छो ऽचि। अर्थात् अम (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न) से आगे शकार के स्थान में छकार आदेश होता है, विकल्प से।

तच्छिव: तद् शिव:- तद् + शिव: इस स्थिति में स्तो: श्चुना श्चु: सूत्र तवर्ग द् के आगे शकार होने के कारण श्चुत्व होने पर तज् शिवः ऐसा होने पर खरि च, सूत्र से जकार का चकार होने पर तच् शिव: ऐसा होता है इस स्थिति में झय: चकार के आगे शकार होने के कारण शश्छोऽटि, सूत्र से शकार का छकार हो गया इसलिये तच्छिव: यह रूप सिद्ध होता है चूंकि शश्छोऽटि सूत्र से शकार का छकार विकल्प से होता है अत: छकार के अभाव में तच् शिव: ऐसा रूप होगा। चत्वं के अभाव में तद् शिव: ऐसा रूप होगा।

मो ऽनुस्वारः (सूत्र) - मान्तस्य पदस्य अनुस्वारः हलि अर्थात्, मान्त (म अन्त में हो जिसका) पद के स्थान में अनुस्वार आदेश होता है यदि हल् (कोई व्यंजन संधि) आगे हो तब।

अब प्रश्न होता कि मान्त पद के दूसरे पद का अनुस्वार होगा। 2. अन्तर देते हैं नहीं। अतो ऽन्त्यस्य सूत्र के विधान के अनुसार अंतिम अक् अर्थात् म् का ही अनुस्वार होगा। सम्पूर्ण पद के स्थान में नहीं।

हरिं वंदे (भगवान् विष्णु को प्रणाम करता हूँ) - हरिम् + वन्दे। इस प्रकार के विग्रह में हरिम् यह मान्त पद है अर्थात् हरे शब्द के द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय होने पर यणि पूर्व सूत्र से पूर्वरूप होने पर हरिम् यह रूप होता है जो सिद्धांत (सुप्तिङन्त पदम्) सूत्र के विधान के अनुसार एक पद है तथा इसके अन्त में मो अनुस्वारः सूत्र से हल् (वन्दे का वे) पर में होने के कारण म् का अनुस्वार हो गया तो फिर हरिं वन्दे यह रूप हुआ।

Scanned with CamScanner